भजन

तर्ज–और इस दिल में क्या रखा है

इश्क सुराही ले कर आए, मयखाना ये सजा रखा है
रूहें प्याले पी कर देखो, इसमे कैसा नशा रखा है

1–बसरी,मलकी में आये,और हक सूरत में आये
कई विध बदली मंजिल है,मगर हम जान नही पाए
शरीयत,हकीकत ,मारफत का वो ज्ञान लेकर आए हैं
वास्ते निसबत के आशिक बने है
माशूक हमको बना रखा है

2–इलम और इश्क ले आये, हुकम और जोश फरमाए
मेहर वो पल पल करते है, जिकर रूहों का करते है
इश्क,इलम,बुध,जोश,हुकम सब साथ मे ले आए
इश्के बुजुरगी साहेब की,
देखो नाम और मान हमे दे रखा है

3–खिलवत,वाहेदत ले आए, आठो सागर के सुख लाए
खेल अक्षर का दिखलाने ,हमे संग माया मे लाए
पच्चीस पख में सुरता को ,अपनी निसदिन पहुचांए
खुदा की खुदाई का आलम तो देखो,
नासूती तन को प्यार किया

4–अर्श की रूहों तुम जानो, धनी अपने को पहचानो
वो क्या क्या न्यामत लाए है, पिया की साहेबी को जानो
इश्क पिलाएं नींद उड़ाएं ,धाम की याद दिलाएं
मोमिनो ने तो दर्दे इश्क को, दर्दे दवा करके जाना